आने वाला कल...

कड़ी संख्या 4

सकारात्मक सोच से सुनहरा भविष्य...

आलेख व अनुसंधान– डॉ. अनुराग शर्मा

संकल्पना और समन्वय: बी. के. त्यागी

पात्र

कैप्टन श्रीकांत– **करीब 24 वर्ष, फौज में कमांडो है**

प्रोफेसर रमन– **करीब 55 वर्ष, आईआईटी चैन्नई में कंप्यूटर साइंस के प्रोफेसर**

प्रोफेसर हसन– **करीब 55 वर्ष, आईआईटी दिल्ली में कंप्यूटर साइंस के प्रोफेसर**

सुबेदार राघव– **48 वर्ष, कैप्टन श्रीकांत के साथ पोस्टिड**

सिस्टर/नर्स

दृश्य 1

(दो जोड़ी बूटों की तेज–तेज चलने की आवाज...)

सुबेदार राघव– श्रीकांत साहब, हम आईआईटी दिल्ली में आपके प्रोफेसर से मिलने जा रहे हैं ना?

श्रीकांत – **हां** सुबेदार राघव, प्राफेसर रमन जी से...

सुबेदार राघव– पर श्रीकांत साहब, आप तो आईआईटी मद्रास...अं...चैन्नई... से पढ़ें हैं तो दिल्ली में क्यों मिल रहे हैं? प्रोफेसर रमन जी का ट्रांसफर हो गया है, क्या?...

कैप्टन श्रीकांत– **आईआईटी मद्रास ही है** और राघव जी, पूरे रास्ते एआई पर कांफ्रेंस के पोस्टर नहीं देखे...दिल्ली में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस हो रही है...प्रोफेसर रमन जी उसी में स्पेशल इंवाइटी हैं, पहला लेक्चर उन्ही का है...असल में देश में एआई के काम को आगे बढ़ाने का श्रेय प्रोफेसर रमन जी को ही है...

सुबेदार राघव– अच्छा...अच्छा...तो कैप्टन साहब यहां भी एआई की ही चर्चा है, पर आप तो ठीक हैं?

श्रीकांत– ठीक हूं...क्या मतलब?

सुबेदार राघव– अरे श्रीकांत साहब, ये तो नियम है कि एआई पर शांति से चर्चा अस्पताल में ही होती है और उसके लिए आपको धायल होना होता है...

राघव हंसता है...

श्रीकांत– डांटते हुए– सुबेदार राघव ये मत भूलिए की मैं आपका सीनियर अधिकारी हूं...आप मेरा मजाक उड़ा रहें हैं?

सुबेदर राघव– (धबराते हुए) नहीं कैप्टन श्रीकांत...म...म...मेरा...मेरा मतलब ये नहीं था...

श्रीकांत– हंसते हुए– क्या सुबेदार राघव जी, मुझसे कई गुना अनुभव तो आपको है फौज का...मैं भी मज़ाक कर रहा था...

दोनो ऊंची आवाज में ठहाका लगाते हैं

श्रीकांत– **लो** राघव जी, ऑडीटोरियम आ गया...मैं जरा वॉशरूम हो आऊं...आप यहीं रुकिए...

तेज कदमों से...लगभग भागते हुए कदमों की आवाज...

राघव– थोड़ी ऊंची आवाज में– अरे श्रीकांत साहब आराम से जाइए...अभी कार्यक्रम शुरू नहीं हुआ है...

पॉज़ के बाद तेज कदमों की आवाजें

श्रीकांत– **सुबेदार** राघव, चलिए जल्दी...ई...ई...ओह...

किसी से तेजी से नीचे गिरने की आवाज...लोगों की आवाजें...

आवाजें– अरे कोई गिर गया...कोई फौजी है...ओहो इसके तो खून निकल रहा है... अरे एंबूलेंस बुलाओ ये बेहोश हो गया है...

राघव– हटिए...पीछे हटिए...श्रीकांत साहब...अरे...एंबूलेंस...

एंबूलेंस के साइरन की तेज आवाज

श्रीकांत– आ...आह...

राघव– अरे कैप्टन साहब लेटे रहिए...लीजिए पानी पीजिए...

पानी के गिलास और पानी पीने की आवाज...

श्रीकांत– धीमी आवाज में दर्द के साथ– राघव जी...आह...क्या हुआ था? मैं अस्पताल कैसे आया?

राघव– कैप्टन श्रीकांत, आप जल्दबाजी में चिकने फर्श पर फिसल गए थे, जिससे आपके सर पर चोट आई और कंधा उतर गया था, अब सब ठीक है...**धीमे से–** पर कैप्टन साहब यहां डॉक्टरों और नर्सों को मैने कहा कि मोटरसाइकिल पर चार बदमाश एक महिला का पर्स छीनकर भाग रहे थे, साहब ने उन्हे पकड़ा थोड़ी हाथापाई हुई...पर हमारे साहब ने उन चारों को खूब पीटा और औरत का पर्स वापस दिलवाकर, उन्हे पुलिस के हवाले किया...बस हाथापाई में थोड़े घायल हो गए...

तभी हल्के जूतों की आवाज...

नर्स– अरे आपको होश आ गया...काफी लंबे समय तक बेहोश रहे आप, दर्द का इंजेक्शन दिया है आपको इसलिए थोड़ा सर भारी लग रहा होगा, थोड़ी नींद भी आएगी...आप आराम कीजिए...चार बदमाशों से अकेले निपटने की भी थकान रही होगी...आप आराम कीजिए...

वापस जाने की जूतों की आवाज...

श्रीकांत– धीमे से– राघव जी, लगता है इसे आपकी कहानी पर भरोसा नहीं है...मुस्कुरा कर गई है...

राघव– हां कैप्टन श्रीकांत लग तो मुझे भी रहा है, पर कोई नहीं ये कोई प्राइवेट क्लिनिक है...कल यहां से निकल लेंगे...तबतक...

श्रीकांत– तबतक क्या, राघव जी?

राघव– अरे तबतक थोड़ा...एआई पर चर्चा हो जाए...

श्रीकांत– मैं इतनी तकलीफ में हूं और आप एकआई पर चर्चा करेंगे...क्या पूछना है... पूछिए?

राघव– कैप्टन श्रीकांत आज में ये जानना चाह रहा हूं कि ये एआई कि खुराफात सबसे पहले आई किसके दिमाग में...सबसे...यानी सबसे पहले किसने एआई के बारे में सोचा...

श्रीकांत– अब ये कहना तो मुश्किल है कि सबसे पहले किसके दिमाग में आया लेकिन यूनानी दंतकथा में एक टेलोस दानव का जिक्र आता है जो तांबे का बना था...

राघव– टेलोस या थैनोस?

श्रीकांत– जी नहीं राघव जी टेलोस...जो क्रीट नामक द्वीप का रक्षक था...

तभी अचानक से दरवाजा खुलने की आवाज...

श्रीकांत– अरे प्रोफेसर रमन जी आप...और प्रोफेसर हसन जी...आइए सर...

राघव– जयहिंद सर...

प्रोफेसर रमन– क्या हाल हैं श्रीकांत, मुझे लेक्चर के बाद तुम्हारे गिरने का पता चला, बस मैं और प्रोफेसर हसन दौड़े चले आए...

तभी दरवाजा खुलने और जूतों के चलने की आवाज...

नर्स– सर, जरा कैप्टन श्रीकांत का टेंप्रेचर लेना है...

प्रोफेसर रमन– जी सिस्टर लीजिए...और आप...

राघव– सर, मैं सुबेदार राघव...साहब की रेजिमेंट से ही हूं...मैं साहब के साथ ही था...

प्रोफेसर हसन– अरे, तो आप इन्हे गिरने के बाद यहां लेकर आए...असल में नया फर्श बना है और टाइल्स कुछ चिकने ही लग गए हैं...और...

राघव– बीच में टोककर और थोड़ा सकपकाकर– जी सर मैं ही इन्हे यहां लेकर आया... कैप्टन साहब ने काफी बहादुरी दिखाई पर...टाइल्स में ही दिक्कत थी...

प्रोफेसर रमन– अच्छा तो सुबेदार साहब आप ही श्रीकांत को यहां लाए...गुड...पर... बहादुरी???

नर्स– चलिए आपको बुखार नहीं है...डॉक्टर साहब ने आपका स्कैन भी देख लिया है, उसमें भी कुछ नहीं है...आपको कल ही छुट्टी मिल जाएगी...

प्रोफेसर हसन– अरे वाह...थैंक यू सिस्टर...पर आपने कहा कि स्कैन में कुछ नहीं है...दिमाग तो आया होगा...

तेज हंसी...

राघव– चलिए सर सिस्टर गई...असल में हमने यहां कहानी कुछ और बता रखी है...पर आपने तो पोल ही खोल दी थी...

प्रोफेसर रमन– अच्छा कुछ बहादुरी का किस्सा सुनाया होगा...लेकिन बात बताऊं...सिस्टर ने ही हमें कहां कि वो पेशेंट जो फिसल गए थे...

तेज ठहाका...

राघव– सच में काफी बेइज्जती हो गई...तो चलिए कैप्टन साहब आप अपनी बात पूरी करिए मैं कॉफी मंगवाता हूं...

श्रीकांत– अरे, सुबेदार राघव अब एआई का पहला विचार कब कौंधा ये आप प्रोफेसर रमन जी से ही सुनिए...मुझसे अच्छा ही बताएंगे...

प्रोफेसर रमन– हां...हां...जरूर बताएंगे...और वैसे भी ये विदेशियों की गप्प सुनाएगा हम कम से कम कुछ भारतीय बातें तो करें...

हंसी

राघव– हां, प्रोफेसर रमन जी ये किसी टेलोस की बता रहे थे...

प्रोफेसर हसन– ओहो, वो तांबे का बना ग्रीक दानव...हां भई...वो दौड़ता, लड़ता सब था...अब क्योंकि तांबे जैसी निर्जीव धातु का बना था और उसमें जीवन भी था तो उसे आज की एआई से जोड़कर तो देखा ही जा सकता है...

प्रोफेसर रमन– ठीक कहा प्रोफेसर हसन, ये निर्जीव चीजों को जीवन देने और मनुष्य की तरह ज्ञानवान बनाने की कोशिश ही तो है एआई...हालांकि दंतकथाओं में अक्सर ऐसे जिक्र आते रहते हैं, जैसे एक यहूदी दंतकथा में गोलेम का जिक्र आता है जो मिट्टी का बना था, कहा जाता था कि किसी भगवान का नाम लिखकर उसके मुंह में डालों वो आदमी की तरह हिलने डुलने लगता था...पर वो बोल नहीं सकता था...

श्रीकांत– हां प्रोफेसर रमन, मुझे ये कहानी याद है...आप ही ने सुनाई थी...

प्रोफेसर हसन– पर श्रीकांत तुमने ये कैसे कह दिया कि ये कहानी थी?

राघव– हैं...तो क्या टेलोस और वो...वो...गोलेम...क्या वो सच में थे...ऐसा कैसे हो सकता है?

प्रोफेसर हसन– क्यों नहीं हो सकता...हमें पता नहीं है तो क्या हो नहीं सकता? अरे कभी हजारों साल पहले आदमी ने सोचा और वक्त बीतने के साथ वो सोच आगे बढ़ी...उसमें कई रंग भरे गए और फिर उसी आदमी ने उस सोच को आज पूरा किया...या पूरा करने की ओर कदम बढ़ा दिए...

राघव– उसी आदमी ने??? प्रोफेसर हसन जी आप तो डरा रहें हैं...वो आदमी तो हजारों साल पहले मर गया होगा तो फिर क्या उसके भूत ने सपना पूरा किया...

हंसी...

प्रोफेसर रमन– क्या सुबेदार साहब, अरे वो ही तो था और आप...आप भी तो वो ही हो...वो ही आदमी...

राघव– प्रोफेसर रमन, अब तो आप सच में डरा रहे हैं...मैं तो फौजी हूं सर...

श्रीकांत– अरे, राघव तुम प्रोफेसर रमन की बात नहीं समझे...वो कह रहे हैं कि हम मानव... यानी होमो सैपियन्स एक ही तो हैं...कोई सोचता है और कोई उस विचार को आगे बढ़ाता है, ये विकास का ही तो हिस्सा है...

प्रोफेसर हसन– सही कहा कैप्टन श्रीकांत, अगर आदमी विकासवाद के चलते बंदर से यहां तक की यात्रा कर सकता है तो क्या कभी गुफामानव ने जो सपने देखे... उन्हे क्या पंख नहीं मिले होंगे?...वो सपने भी तो सच होने निकल लिए होंगे...

श्रीकांत– वाह, प्रोफेसर हसन, बिल्कुल सही कहा आपने...कभी गुफामानव ने पंछियों की तरह उड़ने का सपना देखा, अब गुफामानव खत्म हो गए पर सपना थोड़े ही ना

खत्म हो गया...उसने उड़ान जारी रखी और आज मानव के उड़ने का सपना भी सच हो रहा है...

प्रोफेसर रमन– ठीक कहा श्रीकांत, वैसे देखा जाए तो कभी मन की गति से चलने वाले पुष्पक विमान का हजारों साल पहले जिक्र आया...और आज सुपर सॉनिक... हाइपर सॉनिक...यानी आवाज की गति से पांच...छह...गुना तक तेज विमान उड़ने लगे हैं...और अब ऑटोपाइलट भी तो है...जो विमान खुद ही उड़ा लेता है...ये क्या है, एआई ही तो है...

हंसी...

राघव– पर प्रोफेसर साहब एआई की बात तो बीच में ही रह गई...

श्रीकांत– कहां बीच में रह गई राघव जी, सब एआई ही की तो बात हो रही है...अब सब एक सोच से ही तो आगे बढ़ा है...मानव की सोच ही हर टेक्नोलॉजी का आधार है...तभी तो सकारात्मक...भली सोच रखनी चाहिए...

प्रोफेसर हसन– अब देखो कहने को तो ये एक फिल्म की कहानी है जिसमें एक गोल्डन आर्मी थी...सोने और अन्य धातुओ से बने ये रोबोट जैसी सेना सिर्फ उसी का कहना मानती थी जिसके सर पर एक खास मुकुट हो...और मुकुट पहनकर वो जो आदेश देता था, उसे सेना पूरा करती थी...क्योंकि सेना धातु की बनी थी तो कभी नष्ट नहीं हो सकती थी और हमेशा जीतती ही थी...

प्रोफेसर रमन– अब ये कहानी जिसने भी लिखी वो एआई की ही तो बात कर रहे हैं...

राघव– क्यों प्रोफेसर रमन, एआई की बात कैसे हुई?

श्रीकांत– **अरे** राघव जी, पहले बताया तो था, जो निर्जीव वस्तुएं मानव की तरह कार्य करें...उनकी तरह सोचें...वो आर्टिफिशियन इंटेलिजेंस ही तो हुई।

प्रोफेसर रमन– अब देखिए सुबेदार राघव जी, मानव की कल्पना ये ही रही कि ये लोहा, पत्थर आदि सब निर्जीव चीजें भी उसकी बात माने...और जब कहा मनवाना है, तो मानव कैसे काम करता है, इस पर काम शुरू हुआ, अब हांलाकि मानव शरीर पर काम करने वाले रोगों का इलाज करने लगे पर कहीं दूर बैठा कोई आदमी, मानव की शरीर के बारे में जो ज्ञान उपलब्ध हो रहा था, उससे वो मानव जैसा ही कुछ बनाने की सोचने लगा...

राघव– सही कहा प्रोफेसर रमन, अब मुझे कुछ समझ आ रहा है...शायद ऐसे ही फ्रैंकन्सटीन ने एक खतरनाक राक्षस तैयार कर दिया...

प्रोफेसर हसन– अरे वाह राघव जी आपने विक्टर फ्रैंकन्सटीन के बारे में पढ़ा हुआ है...भई वाह...

श्रीकांत– अरे सर अपने सुबेदार राघव, अपने बच्चों के चक्कर में फुल अपडेट रहतें हैं, कभी इंजीनियर की पढ़ाई करने जा रहे थे, फिर परिवार की हालत देखकर फौज ज्वादन कर ली, पर किसी भी मिशन को डिजाइन करने में सबसे अहम हमारे राघव जी की भूमिका होती है...

राघव– अरे कैसी बात कर रहे हैं कैप्टन श्रीकांत, वैसे 1818 में मैरी शैली के इस उपन्यास पर कई फिल्में भी बनी हैं और कुछ मैने भी देखी हैं...लेकिन प्रोफेसर साहब आप लोग ये कहना चाहते हैं कि मानव की सोच ही आज एआई के सपनों को सच कर रही है...और ये ही मानव की सोच ने अगर फ्रैंकन्सटीन बना दिया तो?

प्रोफेसर रमन– हां ये तो है सुबेदार राघव जी, पर हर रोज अगर फ्रैंकन्सटीन बन रहे हैं तो रोज मानवतावादी भी बन रहे हैं...मानव की सोच तभी तो सकारात्मक होनी जरूरी है...जैसी सोच होगी वैसी की मानव की पीढ़ी विकसित होगी...लेकिन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में काफी काम हो रहा है कभी जो दंतकथाओं तक सीमित था वो अब सामने आने लगा है...

श्रीकांत– ठीक कहा प्रोफेसर रमन जी, अब सोचिए कभी हैरी पॉटर का वो लबादा भी बन जाएगा जिसे ओढ़कर गायब हो जाते हैं...

राघव– हैं...क्या ऐसा भी हो सकता है?

प्रोफेसर हसन– क्यों नहीं हो सकता...अगर कोई पदार्थ प्रकाश को अपने आरपार जाने दे तो हो गए गायब...अब मैसाच्युटस इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ने ऐसा पदार्थ बना लिया है जिसमें लाल रंग की रोशनी घूमकर उसके पार चली जाती है यानी लाल रोशनी में वो पदार्थ नजर नहीं आता...

राघव– क्या कह रहें हैं रमन साहब! लाल रोशनी में वस्तु नजर नहीं आती जबकि है वहीं पर!!! फिर तो आगे चलकर सफेद रोशनी में भी वह वस्तु नजर आनी बंद हो जाएगी?

प्रोफेसर रमन– क्यों नहीं राघव जी, भई सफेद रोशनी तो सात रंगों की बनी है...अब उसमें से लाल रंग की रोशनी को बैंड कर लिया है, कुछ वर्ष में बाकी के छह रंग भी बैंड हो जाएंगे तो हो जाएगा हैरी पॉटर का लबादा तैयार...

श्रीकांत– तो सुबेदार राघव जी, ये समझिए कि आप जो एआई का इतिहास पूछ रहे थे वो ऐसे की विचारों और छोटी–छोटी कोशिशों का नतीजा है...असल में मानव हमेशा से ही ऐसी वस्तु बनाने की कोशिश में रहा जो अपनेआप चलती रहे या कार्य करें मतलब स्वचालित यानी ऑटोमेटिक...

तभी कप–प्लेट की आवाज

नर्स– सर आपकी कॉफी और सैंडविच...और हां सर प्लीज़ मरीज को नहीं दिजिएगा...

श्रीकांत– नहीं सिस्टर, मैं तो वैसे ही कुछ भी खाने के मूड में नहीं हूं...अभी सर में थोड़ा भारीपन है...

नर्स– हां सर, गिरने से थोड़ी चोट तो आई ही है...लगता है आप काफी तेज गिरे थे... और आईआईटी का फर्श भी काफी स्मूथ है...

जूतों की आवाजें...जैसे जा रहा हो कोई...

श्रीकांत– दबी जुबान में– सुबेदार साहब आपने क्या कहा था, इसे तो सब सच पता है...

तेज हंसी...

राघव– लीजिए सर कॉफी लीजिए...

प्रोफेसर हसन– थैंक्यू, राघव जी, वैसे श्रीकांत तुमने सही कहा कि मानव हमेशा से ऑटोमेटिक वस्तु बनाने की सोच में लगा रहा और इसमें काफी सफलता भी मिली। खासतौर से हथियारों के मामले में...वैसे प्राचीन काल में भी ऐसे शस्त्रों का जिक्र आता है, जो अपनी आवश्यकता अनुसार प्रकट होते और अपना कार्य करके चले जाते थे...

श्रीकांत– हां, हसन सर, कई बार पौराणिक कथाओं, रामायण, महाभारत आदि पढ़ता हूं तो सभी अस्त्र–शस्त्र आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आधारित नजर आते हैं...अब सुदर्शन चक्र को ही लीजिए...जब चाहा तब प्रकट...अपना काम किया और गायब...और एक ही व्यक्ति से नियंत्रित होता था...जैसे डीएनए फिंगर प्रिंटिंग के द्वारा अपने स्वामी की पहचान करता हो...

प्रोफेसर रमन– ठीक कहा श्रीकांत, एक बार विश्व की मशहूर पत्रिका रिडर्स डाइजेस्ट ने लिखा था कि महाभारत विश्व का पहला परमाणु युद्ध रहा होगा और अगर कहानी है तो विश्व की पहली साइंस फिक्शन...अगर, बच्चों में आजकल मशहूर पात्र थोर की बात करें...तो उसका हथौड़ा हमेशा उसी के पास उड़कर आता है. ..अब ये हजारों वर्ष पहले की कथाएं हैं...या कहें कल्पना...पर इसी से प्रेरित होकर ऑस्ट्रेलिया के आदिवासियों ने बूमरैंग बनाया जो चलाने वाले के हाथ में घूमकर वापस पहुंच जाता था...हां, अब इन आदिवासियों के बूमरैंग पर थोर का

हथौड़ा आधारित था या थोर के हथौड़े पर बूमरैंग...ये शोध का विषय हो सकता है...लेकिन विचार तो था ही...

राघव– रमन साहब, विचार तो थैनोस का भी आ गया है, तो क्या चुटकी बजाते ही आधी आबादी खत्म...

हल्की हंसी...

प्रोफेसर हसन– वैसे राघव जी आपने जो बात कही वो सोचने की जरूर है...एक विज्ञान लेखक ने कभी लिखा था कि टेक्नोलॉजी तो आग की तरह है, चाहे तो रोटी सेक लो या घर जला लो...तय तो मानव को ही करना है...

राघव– हां, प्रोफेसर हसन, ये बात आपने ठीक कही...अब एआई के दौर में जब टेक्नोलॉजी ही दुनिया का नया इतिहास लिख रही है...ऐसे में मानवीय मूल्यों की रक्षा और नए सिरे से उनकी विवेचना भी बेहद आवश्यक है...सकारात्मक सोच से ही सुनहरा भविष्य बनेगा...

श्रीकांत– बहुत बढ़िया बात कही राघव जी आपने...सर एक हमारे मेजर राम हैं...एकबार मुझसे कह रहे थे कि श्रीकांत सब कहते हैं कि ये विज्ञान का युग है...साइंस का ज़माना है पर मैं कहता हूं कि अब साइंस नहीं बल्कि सांइस फिक्शन युग है... और मानवीय मूल्यों की आज जितनी आवश्यकता है उतनी आवश्यकता शायद पहले कभी नहीं रही...

जूतों की आवाज...

नर्स– सर, अब आपको आराम की आवश्यकता जरूर है...प्लीज़ सर अब पेशेंट को आराम करने दिजिए...

प्रोफेसर रमन– ओह जरूर सिस्टर...और थैंक्स फॉर द नाइस कॉफी...ठीक है श्रीकांत...ठीक हो जाओ फिर एक–दो दिन में मिलते हैं...मैं अभी पूरे हफ्ते यहां हूं...

श्रीकांत– जी सर, मैं ठीक होकर आईआईटी आता हूं...

प्रोफेसर हसन– हां श्रीकांत, लेकिन आईआईटी में सम्भल के चलना अब फिर से मत गिर जाना...

हंसी...

राघव– अरे सर, हमारे साहब आपके फर्श पर गिरे हैं, आपकी कांफ्रेंस जरूरी सफल होगी...

तेज हंसी के साथ समापन

– समाप्त –